Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Impact Factor (IIJIF): 5.454 | Vol. 8, Issue 1 | May. 2020 - October 2020 | pp. 93-97

मौलाना अबुल कलाम आजाद के विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषण

निकिता सागर

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

मौलाना अबुल कलाम आजाद ने जीवन पर्यन्त हिन्दू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा दिया। मौलाना का जीवन व व्यक्तित्व, राष्ट्रीय सीमाओं को पार कर गया था। मौलाना अबुल कलाम आजाद, स्वतन्त्र भारत के प्रथम शिक्षा मन्त्री तथा एक महान् विद्वान्, कवि और महान् राष्ट्रवादी नेता थे, जिन्होंनें लोगों में स्वदेश-प्रेम की भावना को प्रोत्साहित करने का पूरा प्रयत्न किया तथा अपने सम्पूर्ण जीवन में हिन्दू-मुस्लिम एकता तथा राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दिया। वर्तमान में देश के समक्ष साम्प्रदायिक तनाव, संघर्ष व टकराव पैदा करने वाले घटक एक बार पुन: देश के विभिन्न भागों में अपना प्रभाव दिखा रहे हैं। इस विकट परिस्थिति में हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रणेता मौलाना आजाद के विचारों व उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व का विश्लेषण करना इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है जिससे देश की एकता व अखण्डता को बनाये रखा जा सके।

संकेताक्षर : *आधुनिक शिक्षा, राष्ट्रवाद का प्रसार, लिसानस सिद्क, अल-बालाग, अल-हिलाल, रामगढ़ अधिवेशन*

प्रस्तावना

मौलाना अबुल कलाम आजाद का भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के देशभक्तों और वीरों की पंक्ति में एक विशिष्ट स्थान है। मौलाना एक विद्वान् राजनेता तथा राष्ट्रवादी मुसलमानों में सबसे प्रमुख थे। जिन्होंनें मोहम्मद अली जिन्ना द्वारा प्रतिपादित **द्वि-राष्ट्र सिद्धान्त** को चुनौती देते हुए अखण्ड भारत के लिए संघर्ष किया। राजनीतिक स्वाधीनता मौलाना के दिल की आवाज ही नहीं बल्कि उनका मिशन भी था। मौलाना मजहब का नवीन रूप में भावार्थ प्रस्तुत करके न सिर्फ 'अबुल कलाम' ही बने, बल्कि आजाद को अपने नाम का हिस्सा बनाकर मुक्ति के जियालों के लिये एक शाश्वत सन्देश छोड़ गये।

स्वतन्त्र भारत के प्रथम शिक्षा मन्त्री, महान् स्वतन्त्रता सेनानी, सत्य, शान्ति और एकता का सन्देश देने वाले भारत रत्न मौलाना आजाद का पूरा नाम मौलाना सैय्यद अबुल कलाम गुलाम अहमद मुहीयुद्दीन अहमद बिन खैरूद्दीन अल हुसैनी आजाद था। आजाद परिवार का उद्गम हेरात (अफगानिस्तान) के मशहूर उलेमा से हुआ था। मौलाना अबुल कलाम का जन्म 11 नवम्बर, 1888 को मक्का में हुआ। मौलाना के पिता का नाम मोहम्मद खैरूद्दीन था। कलाम परिवार बंगाल में बस गया लेकिन सन् 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान वे मक्का चले गये। मक्का में ही मोहम्मद खैरूद्दीन ने शेख मोहम्मद जाहेर वत्री की पुत्री आलिया बेगम से विवाह कर लिया। मोहम्मद खैरूद्दीन एक बंगाली मौलाना थे, जो बहुत बड़े विद्वान् थे। मौलाना अबुल कलाम आजाद के जन्म के दो वर्ष पश्चात् ही मोहम्मद खैरूद्दीन 1890 में पूरे परिवार सहित कलकत्ता आ गए।

मौलाना आजाद की शिक्षा दीक्षा

मोहम्मद खैरूद्दीन पुराने रीति-रिवाजों को मानने में भरोसा रखते थे। खैरूद्दीन पश्चिमी शिक्षा प्रणाली पर विश्वास नहीं रखते थे। खैरूद्दीन के अनुसार पश्चिमी शिक्षा धार्मिक आस्था को नष्ट कर देती है इसलिए उन्होंने मौलाना आजाद को परम्परागत ढ़ंग से शिक्षा प्रदान कराने का निर्णय किया। हिन्दुस्तान में मुसलमानों की शिक्षा का प्रारम्भिक चरण फारसी था। फारसी के अध्ययन के पश्चात् अरबी पढ़ाई जाती थी। जब उन्हें अरबी भाषा का कुछ ज्ञान प्राप्त हो जाता था तब उन्हें इसी भाषा में दर्शन, ज्यामिति,

ISSN 2348-3857

गणित व बीज गणित का अध्ययन करवाया जाता था। इस्लामी धर्मशास्त्र का ज्ञान भी उनकी शिक्षा का एक अनिवार्य अंग था। मोहम्मद खैरूद्दीन ने मौलाना आजाद को सर्वप्रथम घर पर ही शिक्षा दिलवाई। मौलाना की माता ने उन्हें अरबी भाषा सिखाई व पिता ने उर्दू का ज्ञान करवाया। खैरूद्दीन ने स्वयं मौलाना आजाद को पढ़ाया फिर अलग-अलग विषय के लिये अलग-अलग शिक्षक नियुक्त कर दिये। मोहम्मद खैरूद्दीन चाहते थे कि मौलाना को ऐसे लोग पढ़ाये जो स्वयं अपने-अपने विषयों के प्रकांड विद्वान हो। '**दरसे निजामी**' के पूरे पाठ्यक्रम में अरबी, फारसी भाषा दर्शन तथा अंकगणित आदि की शिक्षा दी जाती थी। तत्कालीन समय में कोई भी पाठ्यक्रम तब तक पूरा नहीं माना जाता था जब तक विधार्थी यह साबित ना कर दे कि उसमें दूसरों को पढ़ाने की योग्यता आ गई है। शिक्षा संस्थान द्वारा 'तालीम' का प्रमाण-पत्र भी तभी प्रदान किया जाता था। जिस विद्यार्थी को पारम्परिक रूप से शिक्षा दी जाती थी वह बीस से पच्चीस वर्ष की उम्र तक अपना शिक्षा-क्रम पूरा कर पाता था लेकिन मौलाना आजाद ने सोलह वर्ष की उम्र में ही अपना शिक्षा क्रम पूरा कर लिया। मोहम्मद खैरूद्दीन ने मौलाना के ज्ञान की परीक्षा लेने हेतु उन्हें पन्द्रह से बीस विद्यार्थियों को उच्च स्तर का दर्शन, गणित व तर्कशास्त्र पढ़ाने को कहा। मौलाना आजाद इस परीक्षा में सफल हुए।

मौलाना आजाद व आधुनिक शिक्षा

मौलाना आजाद को सर सैय्यद खान की रचनाएँ पढ़ने का अवसर मिला। मौलाना, सैय्यद अहमद खान के आधुनिक शिक्षा संबंधी विचारों से बहुत अधिक प्रभावित हुए। मौलाना आजाद ने अनुभव किया कि आधुनिक संसार में कोई भी व्यक्ति तब तक सही अर्थ में शिक्षित नहीं हो सकता जब तक कि वह आधुनिक विज्ञान, दर्शन और साहित्य का अध्ययन नहीं करता। कलाम ने अंग्रेजी सीखने का निर्णय किया। मौलाना ने मौलवी मोहम्मद युसुफ जाफरी से बात की जो प्राच्य शिक्षा-क्रम में मुख्य परीक्षक थे। उन्होंने मौलवी मोहम्मद युसुफ जाफ़री से अंग्रेजी वर्णमाला का ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् बाइबिल के अंग्रेजी संस्करण का अध्ययन किया।

यह समय मौलाना आजाद के लिए घोर मानसिक संकट का था। मौलाना के शब्दों में ''मैनें अनुभव किया कि आधुनिक संसार में कोई भी व्यक्ति तब तक सही अर्थ में शिक्षित नहीं हो सकता जब तक की वह आधुनिक विज्ञान,दर्शन और साहित्य का अध्ययन नहीं करता। उस समय मेरे लिए घोर मानसिक संकट का समय था। मेरा जन्म ऐसे परिवार में हुआ था जो धार्मिक परम्पराओं में जकड़ा हुआ था। मेरे परिवार को यह स्वीकार नहीं था कि कोई पुराने रीति-रिवाजों से थोड़ा-सा भी इधर-उधर हटे। लेकिन मैं अपने परिवार व प्रारम्भिक शिक्षा से मिले ज्ञान से संतुष्ट नहीं था। मुझे लगता था कि मैं स्वयं सत्य की खोज करूँ। मैंने इस मानसिक संकट का बड़ी वीरता से सामना किया और अपनी ज्ञान पिपासा को शान्त करने के लिये परिवार के घेरे से बाहर निकल अपना मार्ग खोजने में लग गया। दो-तीन वर्ष तक मैं अपनी शंकाओं का समाधान पाने के लिए व्याकुल रहा। अन्त में ऐसी स्थिति आ गई जब अपने परिवार व पालन-पोषण के कारण मेरे मन में जो पुराने बन्धन थे, वे सब छिन्न-भिन्न हो गए । तब मैंने निर्णय लिया कि मैं अपना उपनाम ''**आजाद**'' रख लूँगा ताकि मैं सबको बता सकू कि मुझे जो विरासत में परम्परागत बन्धन मिले थे उनसे मैं अब बंधा हुआ नहीं हूँ।''

पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्रवाद का प्रसार

अबुल कलाम आजाद की सभी क्षेत्रों में ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा थी । अबुल कलाम को अपने पूर्वजों से साहित्यिक गुण विरासत में मिले थे। कलाम मेधावी छात्र होने के साथ-साथ एक किशोर लेखक व पत्रकार भी थे। किशोरावस्था में ही उनके कई लेख विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगे। मौलाना आजाद ने अपने पत्रों के माध्यम हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रसार किया व मुस्लिम वर्ग को राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। '**लिसानस सिद्क**' (सत्य की पुकार) इस दिशा में प्रथम कदम था।

लिसानस सिद्क (सत्य की पुकार)

मौलाना के अनुसार मनुष्य का कर्तव्य व जिम्मेदारी है कि असत्य के खिलाफ रक्षा व सच्चाई की राह पर देश का नेतृत्व करे। मौलाना के अनुसार 'सत्य' की भाषा हमेशा कठोर होती है, यह अपने आप को कठोर शब्दों में ही व्यक्त करता है। सत्य को कई बार कठोर आलोचनाओं का भी सामना करना पड़ता है। लिसानस सिद्क का उद्धेश्य मुस्लिम समाज व रीति-रिवाजों में सुधार लाना, उर्दू के विद्धानों के साहित्य के दायरे का विस्तार करना व उर्दू प्रकाशनों की वस्तुनिष्ठ समीक्षा करना था। मौलाना का विचार था कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों को स्वतन्त्रता के राष्ट्रीय संग्राम में सबसे आगे रहना चाहिए व देश की स्वतन्त्रता के लिए पूरा-पूरा सहयोग देना चाहिए। मौलाना इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों को जागरुक करने के लिए जनमत तैयार करना चाहिए। इसी उद्देश्य से अल हिलाल छापाखाना लगाया। अल हिलाल का पहला अंक जून 1912 में निकला।

अल-हिलाल

अल-हिलाल से उर्दू पत्रकारिता में नया मोड़ आया। अल हिलाल ने जन साधारण में नई क्रान्तिकारी चेतना पैदा कर दी। इस पत्रिका के

माध्यम से अबुल कलाम ने अंग्रेजी साम्राज्यवाद को लक्ष्य किया था। कलाम बीते समय के उदाहरण देकर अपने तर्कों को समर्थन देते थे। एक लेख में उन्होंने लिखा है, ''ब्रिटिश साम्राज्यवाद का यथार्थ अत्याचार के सिद्धान्त पर टिका है। भारत में अंगेजी शासन इसलिये नहीं स्थापित हो गया कि वह अन्दर से शक्तिशाली है, अपितु इसलिये क्योंकि हम लोग ढीले पड़ गए थे। अन्याय करना उनकी आदत है। हमारी शिकायत से उन्हें कोई प्रभाव नहीं पडेग़ा। उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकना ही एकमात्र उपाय है।''

'अलहिलाल' के माध्यम से अबुल कलाम ने अपने धार्मिक दृष्टिकोण को भी लोगों के सामने रखा। मौलाना के शब्दों में-''वास्तविक मानव सेवा सच्चे धर्म पर आधारित होनी चाहिये। यदि धर्म के कारण अशान्ति हो रही हैं तो इसका अर्थ है कि धर्म के अनुयायियों ने धर्म को समझने में त्रुटि की है। मुसलमानों का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वे स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए हर संभव प्रयास करें, उन्हें तब तक आराम नहीं करना चाहिए जब तक वे संसदीय सरकार का रूप स्थापित नहीं कर लेते।''

अल-हिलाल पत्रिका पर सरकार ने प्रतिबन्ध लगाना प्रारम्भ कर दिया। 1914 में महायुद्ध आरम्भ हो गया और 1915 में ब्रिटिश सरकार ने अल-हिलाल छापेखाने पर अधिकार कर लिया। पाँच माह पश्चात् मौलाना ने ''**अल-बालाग**'' नाम से नया छापाखाना पुन: खोला लेकिन सरकार ने ''भारत-रक्षा विनियमों (डिफेंस ऑफ इण्डिया रेगुलेंशस) का सहारा लिया व उन्हें 1916 में कलकत्ता से बाहर निकाल दिया। ''**कौल-ए-फैसल**'' में मौलाना ने लिखा ''इस्लाम इस बात की अनुमति नहीं देता है कि मुसलमानों को अपनी स्वतन्त्रता को आत्मसमर्पण करने के बाद जीना चाहिए। उन्हें या तो स्वतन्त्र रहना चाहिए या फिर नष्ट हो जाना चाहिए। इस्लाम में कोई तीसरा रास्ता नहीं है।'' मौलाना अबुल कलाम ने तर्जुमन-उल-कुरान, लिसानस सिद्क, कौल-ए-फैसल, अल-हिलाल, अल-बालाग, तर्जुमन-उस-कुरान, सुरत-उल-फतिहा, हमाद, सूरत-उल-फतह की तालमी रूह, तजकिराह, नेरंगे-आलम, गुबार-ए-खारित, आजादी की कहानी, दास्ताने कर्बला, इन्सानियत मौत के दरवाजे पर आदि पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया।

मौलाना आजाद और महात्मा गाँधी

1920 में खिलाफत आन्दोलन तुर्की के सुल्तान के अधिकारों की रक्षा के लिए प्रारम्भ किया गया था। महात्मा गाँधी ने मुसलमानों का इस आन्दोलन में साथ देने की घोषणा की। गाँधी जी के अतिरिक्त मौलाना अबुल कलाम आजाद, लोकमान्य तिलक व अन्य कांग्रेसी नेताओं ने खिलाफत के प्रश्न पर हिन्दुस्तान के मुसलमानों का समर्थन किया। मेरठ में खिलाफत आन्दोलन आयोजित किया गया। इसी सम्मेलन में महात्मा गांधी ने असहयोग आन्दोलन का कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

सितम्बर 1920 में कलकत्ता में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन आयोजित किया गया। इस अधिवेशन में महात्मा गांधी द्वारा तैयार किये गये असहयोग कार्यक्रम पर विचार करना था। महात्मा गांधी ने कहा हमें सरकार के साथ किसी भी प्रकार का सहयोग नहीं करना चाहिए, तभी सरकार समझौते के लिए तैयार होगी। उन्होंने श्री सी.आर. दास, मोतीलाल नेहरू व हकीम अजमल खाँ ने स्वराज्य पार्टी का गठन किया व विधान सभाओं में प्रवेश का कार्यक्रम रखा जिसका गांधी जी के अनुयायियों ने विरोध किया। इस प्रकार सुझाव दिया कि सारे सरकारी खिताब वापस कर दिये जाएं, अदालतों व शिक्षा संस्थाओं का बहिष्कार किया जाए । मौलाना अबुल कलाम आजाद ने महात्मा गांधी का समर्थन दिया व अनेक नेताओं के विरोध के बावजूद असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव भारी बहुमत से पास हुआ।

सरकार ने प्रतिक्रिया स्वरूप बंगाल में श्री सी. आर. दास व मौलाना अबुल कलाम को गिरफ्तार कर लिया। 1 जनवरी 1923 तक मौलाना आजाद को रिहा नहीं किया गया। कांग्रेस के **गया अधिवेशन** के दौरान कांग्रेस में भारी मतभेद पैदा हुआ। कांग्रेस परिवर्तन विरोधी व परिवर्तन समर्थक में बंट गई। मौलाना आजाद ने जेल से मुक्त होते ही इन दोनों वर्गो में समझौता कराने का प्रयास किया। परिणामस्वरूप सितम्बर 1923 को विशेष अधिवेशन में समझौता हुआ। मौलाना आजाद को पैंतीस वर्ष की आयु में ही अधिवेशन की अध्यक्षता करने को कहा गया। वे सबसे कम आयु में कांग्रेस अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

1928 में साइमन कमीशन के हिन्दुस्तान दौरे से राजनीतिक उत्तेजना बढ़ गई। 1929 में कांग्रेस ने स्वतन्त्रता प्रस्ताव पास किया व ब्रिटिश सरकार को चेतावनी दी कि एक वर्ष में राष्ट्र की मांग पूरी ना की गई तो कांग्रेस जन आन्दोलन करेगी। 1930 में कांग्रेस ने घोषणा की वह नमक कानून तोड़ेगी। गांधीजी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में मौलाना आजाद ने उनका सहयोग दिया। सरकार ने कार्यवाही करते हुए कांग्रेस को गैर-कानूनी संस्था घोषित कर दिया। कांग्रेसी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। मौलाना आजाद को मेरठ में दिये गये भाषण के कारण गिरफ्तार कर लिया गया। गाँधी - इरविन समझौता के परिणामस्वरूप कांग्रेस नेताओं व मौलाना आजाद को रिहा किया गया। गांधी जी ने एक मात्र

ISSN 2348-3857

प्रतिनिधि के रूप में गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया लेकिन ये वार्ता असफल रही व गाँधी जी को खाली हाथ भारत लौटना पड़ा। 1935-36 में देश में चुनाव हुए, कांग्रेस ने संसदीय समिति का गठन किया, जिसमें अबुल कलाम को भी सदस्य बनाया गया। 1938 में मौलाना आजाद ने कांग्रेस अध्यक्ष सुभाषचन्द्र बोस व गांधी जी के बीच समझौता कराने का प्रयास किया।

मौलाना आजाद द्वारा रामगढ़ अधिवेशन की अध्यक्षता

सन् 1940 में अबुल कलाम रामगढ़ में कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गये। इस अधिवेशन में मुस्लिम लीग ने 'द्विराष्ट्र के सिद्धान्त' की घोषणा की। मौलाना अबुल कलाम आजाद ने अपने अध्यक्षीय भाषण में मुस्लिम लीग के '**द्विराष्ट्र के सिद्धान्त**' (जिसमें कहा गया था कि हिन्दू व मुस्लिम दो राष्ट्र है जो एक साथ नहीं रह सकते) का विरोध किया। मौलाना ने सारे मुसलमानों से अपील की कि देश की एकता व धर्मनिरपेक्षता बनाए रखने में वे उनका सहयोग करें, क्योंकि हिन्दू व मुस्लिम हमेशा से भाइयों की तरह रहे है। मौलाना आजाद के शब्दों में-''एक व्यक्ति हिंदू, मुस्लिम, पारसी, ईसाई इत्यादि होते हुए भी पक्का देशभक्त हो सकता है। पर उसके लिए भारत की प्राचीन संस्कृति को आधुनिकता से जोड़ने की आवश्यकता है।'' जून 1942 तक अबुल कलाम को समझ आ गया था कि अंग्रेजों के खिलाफ विरोध का कोई-न-कोई मार्ग अपनाना पड़ेगा वरना कांग्रेस अपना अस्तित्व खो देगी।

गहन विचार विमर्श के बाद 'भारत छोड़ो आन्दोलन' की शुरूआत की गई। 7 अगस्त 1942 को कांग्रेस अध्यक्ष मौलाना अबुल कलाम ने गोवालिया टैंक (बंबई) के पास जोशीला भाषण दिया व भारतीयों से तन, मन, धन से इस आन्दोलन में लग जाने का आव्हान किया। 9 अगस्त 1942 को अबुल कलाम व कांग्रेसी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गय। अबुल कलाम को अहमदनगर की जेल में रखा गया। इस दौरान उनकी पत्नी व इसके पश्चात् उनकी बहन का देहांत हो गया। तब यदि वे चाहते तो माफी मांगकर या पैरोल पर बाहर आ सकते थे, किन्तु ऐसा करना उनके स्वाभिमान के विरुद्ध था।

विश्व युद्ध समाप्त हो गया व सभी राजनीतिक बन्दियों को रिहा कर दिया गया। सन् 1946 में इंग्लैण्ड से आए कैबिनेट मिशन ने भारतीय नेताओं से पुन: बातचीत की। अबुल कलाम ने कांग्रेस का पूर्ण स्वराज का विचार प्रस्तुत किया और आजादी की मांग की। अबुल कलाम के बाद नेहरू ने कांग्रेस का अध्यक्ष पद ग्रहण किया। देश को पूर्ण स्वतन्त्रता के लिए तैयार करने के उद्धेश्य से सरकार ने आम चुनावों की घोषणा की। कांग्रेस को चुनाव में भारी सफलता मिली दो-तीन स्थानों को छोड़कर कांग्रेस की सरकार बनी। अबुल कलाम भी चुनाव में सफल हुए उन्हें केन्द्रीय सरकार में शिक्षा मन्त्री का पद दिया गया।

16 अगस्त, 1946 को जिन्ना ने 'सीधी कार्यवाही दिवस' मनाया, जिसके कारण देश में दंगे भड़क उठे। अबुल कलाम ने ऐसे समय में बिहार व बंगाल का दौरा कर हिन्दुओं व मुसलमानों से अमन - चैन रखने की अपील की। सन् 1947 की शुरूआत में ही कांग्रेस और मुस्लिम लीग का गठबंधन दम तोड़ रहा था। पंजाब और बंगाल को सांप्रदायिक आधार पर बांटने की तैयारी हो रही थी। 14 अगस्त 1947 को पाकिस्तान के रूप में भारत का विभाजन हो गया।

स्वतंत्र भारत के नेहरू मन्त्रिमंडल में अबुल कलाम को शिक्षा मंत्री बनाया गया। इस पद पर रहते हुए उन्होंने स्कूल और कॉलेज खोलने के कई राष्ट्रीय कार्यक्रम चलाए। मौलाना ने मौलिक शिक्षा को अनिवार्य बनाने पर जोर दिया। 'अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्' का गठन उनके प्रयासों से ही संभव हुआ। देश के साहित्यिक व सांस्कृतिक विकास के लिए उन्होंने साहित्य अकादमी, संगीत-नाटक अकादमी तथा ललित कला अकादमी के गठन में सक्रिय योगदान दिया।

सन् 1951, 1952 तथा 1955 में अबुल कलाम संसद में कांग्रेस पार्टी के उपनेता भी रहे। अपने धर्म निरपेक्ष विचारों के कारण वे सदा अपने समकालीन नेताओं में सम्मानीय रहे।

स्वतन्त्रता से पहले सन् 1923 व 1940 से 1946 तक उन्होंने आठ वर्ष तक कांग्रेस के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया। शिक्षा मन्त्री के रूप में दस वर्ष तक कार्य किया। देश सेवा के लिए निरन्तर कार्य करते हुए 22 फरवरी 1958 को मौलाना अबुल कलाम आजाद का देहावसान हो गया। देश की आजादी में सक्रिय योगदान देने व साम्प्रदायिक सौहार्द को मजबूत करने के लिए सन् 1992 को उन्हें मरणोपरांत भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' प्रदान किया गया।

निष्कर्ष

मौलाना अबुल कलाम आजाद, स्वतन्त्र भारत के प्रथम शिक्षा मन्त्री तथा एक महान् विद्वान्, कवि और महान् राष्ट्रवादी नेता थे, जिन्होंने लोगों में स्वदेश-प्रेम की भावना को प्रोत्साहित करने का पूरा प्रयत्न किया तथा अपने सम्पूर्ण जीवन में हिन्दू-मुस्लिम एकता तथा राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दिया। उनका जीवन एवं व्यक्तित्व राष्ट्रीय सीमाओं को पार कर गया था।

मौलाना आजाद की शुद्ध राष्ट्रीयता, मातृभूमि की स्वतन्त्रता के प्रति उनकी वचनबद्धता, साम्प्रदायिक एकता तथा सद्भाव के बारे में उनके विचार भावी पीढ़ी के मार्गदर्शन के लिए दीप स्तम्भ का कार्य करते रहेंगे। मौलाना के विचार मातृभूमि के हितार्थ सेवा व बलिदान करने के लिए सदा स्तम्भ का कार्य करते रहेंगे। वर्तमान में धर्म के गलत अर्थ का प्रचार-प्रसार कर भारत को कई भागों में विभाजित किया जा रहा है ऐसी परिस्थिति में मौलाना आजाद के विचारों का गहन अध्ययन कर इस समस्या का हल निकाला जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमार, कौशल, मौलाना अबुल कलाम आजाद, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 2013, पृ.सं. 25,34,62
2. सिंह, मनोज कुमार एवं चौधरी, शैलेश कुमार, भारतीय राजनीतिक चिन्तक मौलाना अबुल कलाम आजाद, डिस्कवरी पब्लिशिंग, हाउस प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2011, पृ.सं. 1, 198
3. वासे, अख्तरूल, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, सांखला प्रिण्टर्स, विनायक शिखर, बीकानेर, 2012
4. आजाद, अबुल कलाम, आजादी की कहानी, ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 1988, पृ.सं. 1-4,7-12
5. नेहरू, आजाद, 1857 पर वक्तव्य, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
6. गुप्ता, मोहन लाल, आधुनिक भारत का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागर, 2014
7. आजाद, अबुल कलाम, इंडियाज मौलाना, सलेक्टेड स्पीच एंड राइटिंग, वोल्युम 2, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1990 पृ.सं. 21
8. कुमार, रवीन्द्र, सलेक्टेड वर्क्स ऑफ मौलाना अबुल कलाम आजाद, अटलाटिक पब्लिसर्श एंड डिस्टीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 1991
9. आजाद, अबुल कलाम, इंडियाज मौलाना, सलेक्टेड स्पीच एंड राइटिंग, पूर्वोक्त